International Journal of Humanities and Arts

ISSN Print: 2664-7699
ISSN Online: 2664-7702
Impact Factor: RJIF 8.00
IJHA 2023; 5(2): 48-52
www.humanitiesjournals.net
Received: 22-09-2023
Accepted: 26-10-2023

डॉ. सोमवीर सिंघल
सहायक आचार्य (संस्कृत विभाग)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सोमवीर सिंघल
सहायक आचार्य (संस्कृत विभाग)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

पण्डित मधुसूदन ओझा विरचित व्याकरणविनोद में प्रतिपादित 'अव्ययीभावसमास' का अवलोकन

डॉ. सोमवीर सिंघल

DOI: https://doi.org/10.33545/26647699.2023.v5.i2a.87

सारांश

आचार्य पण्डित मधुसूदन ओझा जी ने संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने लगभग 200 ग्रन्थों की रचना की, जिनमें से अधिकांश अनुपलब्ध हैं। उनके व्याकरणशास्त्र पर आधारित ग्रन्थ 'व्याकरणविनोद' में अव्ययीभाव समास पर गहराई से विवेचना की गई है। इस ग्रन्थ में छः प्रकरण हैं, जिनमें समास, तद्धित, नामधातु, प्रक्रिया, कृदन्त, और अव्यय परिच्छेद शामिल हैं। ओझा जी ने अव्ययीभाव समास के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण किया, जिसमें समास के भेद और अव्ययीभाव के प्रमुख लक्षणों को समझाया गया है।

सूचक शब्द: आचार्य पण्डित मधुसूदन ओझा, व्याकरणविनोद, अव्ययीभाव समास, संस्कृत ग्रन्थ, समास परिच्छेद, संस्कृत व्याकरण, साहित्य विश्लेषण

प्रस्तावना

आचार्य पण्डित मधुसूदन ओझा जी की पूरी वंश परम्परा ने संस्कृत की सेवा की। इनके पिताजी और पितामह भी संस्कृत के बड़े आचार्य और विद्वान थे। मधुसूदन ओझा जी ने अनेक विषयों को आधार बनाकर लगभग 200 ग्रन्थों की रचना की है। उनमें से आधे से अधिक ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। मानव आश्रम मुद्रणालय की सूचीपत्र में प्रकाशित इनके 68 ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है । आचार्य पण्डित मधुसूधन ओझा ने द्वारा व्याकरणशास्त्र, दर्शनशास्त्र, साहित्यशास्त्रादि अनेक विधाओं के ग्रन्थों की रचना की। व्याकरणविनोद व्याकरणशास्त्र का एक महनीय ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ में व्याकरणशास्त्र को आधार बनाकर नवीन शैली से व्याकरण का निरूपण किया गया है। व्याकरणविनोद नामक ग्रन्थ में छः प्रकरण हैं। प्रथम प्रकरण समास परिच्छेद है। द्वितीय प्रकरण तद्धित परिच्छेद है। तृतीय प्रकरण नामधातु परिच्छेद है। चतुर्थ प्रक्रिया परिच्छेद है। पञ्चम कृदन्त परिच्छेद है, तथा षष्ट परिच्छेद अव्यय परिच्छेद है। ग्रन्थ के सारे प्रकरण उपलब्ध हैं। ओझा जी ने समास परिच्छेद में द्विरुक्त प्रकरण को स्वीकार करके समास रूप में ही द्विरुक्त समास नाम से उसका व्याख्यान किया।

तत्पश्चात् अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व आदि समास के भेदोपभेदों का विस्तार से विवेचन किया है।

समास का शाब्दिक अर्थ है एक साथ रहना । समास एक संज्ञा भी है। अनेकपदानामेकपदी भवनं समासः। अनेक पद मिलकर एकपद होना समास है। समास का विग्रह है - समसनं समासः अर्थात् संक्षिप्त होने को समास कहते हैं। दो या दो से अधिक पद जहाँ एक जगह, एकपद, एक अर्थ वाले बन जाते हैं, उसे समास कहते हैं। जैसे– गङ्गायाः जलम् में गङ्गायाः षष्ठ्यन्त अलग पद है और जलम् प्रथमान्त अलग पद है। गङ्गायाः का अर्थ है - गङ्गा का और जलम् का अर्थ है पानी। ये पद भी अलग हैं और अर्थ भी अलग हैं। समास करके एक पद हो जायेगा- गङ्गाजलम् और अर्थ भी एक ही होगा – गङ्गाजल।

जब हम अव्ययीभाव समास की चर्चा करते हैं, इसका अध्ययन करते हैं तो हम पाते हैं। अनव्ययम् अव्ययं सम्पद्यते इति अव्ययीभावः । अर्थात् जिस समास में जो अव्यय नहीं है, वह अव्यय हो जाता है, उस समास को अव्ययीभाव समास कहा जाता है। प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानो ऽव्ययीभावः । अव्ययीभाव समास में पूर्व के अर्थ की प्रधानता होती है। समास में कम से कम दो पद तो रहते ही हैं और उनमें प्राय: पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता रहती है। इस समास में प्रायः अव्यय पूर्व में होता है। समास होने के बाद पूरा शब्द अव्ययीभावश्च से अव्ययसंज्ञक हो जाता है। इसका उदाहरण है- उपकृष्णम् = कृष्ण के समीप ।

सर्वप्रथम ओझा जी लिखते हैं अथाव्ययीभावः। अनव्ययस्यावयत्व संपत्तिरव्ययीभाव: 1।

यहां पर ओझा जी एक रूप में महत्त्वपूर्ण चर्चा करते हैं ।– *पूर्वपक्ष–* अत्र पृच्छायते उपकृष्णमित्येवमादिरेवेष्यते सोऽव्ययीभावः। तत्र तावन्नोपस्याव्ययीभावः, नित्याव्ययत्वात्। अभूततद्भावानवक्लृप्तेः। नापि कृष्णस्य। इदानीमपि तस्यानव्ययत्वात्। नापि वा अस्य समासस्य। अव्ययत्वविधिना सहैव समास विधानादौत्पत्तिकेऽव्ययत्वेऽभूततद्भावासंभवात्। तस्मात् कस्यानव्ययस्य सतोऽयमुपरिष्टादव्ययीभावः ?

उपकृष्णम् पद में पूर्व पक्ष की ओर से एक शंका की गई है कि आप ये बताइए कि उपकृष्णम् इस पद में आप अव्ययीभाव किसको मानेंगे? **उप** पद को अव्ययीभाव मानेंगे तो वह हो नहीं सकता क्योंकि वह तो **स्वरादिनिपातमव्ययम्**[i] से नित्य अव्यय है। **अभूततद्भावानवक्लृप्तेः** अर्थात् जो वह नहीं है उसके होने की कल्पना की जा रही है।

या फिर कृष्ण पद को अव्ययीभाव मानेंगे? उसमें तो विभक्ति का आधान होता है। अतः वह भी अव्ययीभाव नहीं हो सकता। या समास का और दूसरा ही कोई स्वरूप रखेंगे।

अव्ययीभाव को ही समास कहेंगे, या समास को ही अव्ययीभाव कहेंगे?

अत्रोच्यते। न वयं समासस्यावयीभावं कल्पयामः, किम् तर्हि समासमेवाव्ययीभावं ब्रूमोऽव्ययीभावं वा समासम् ।

येषां पदानां समासस्तेषां प्रागव्ययानामनव्ययानां वा सतामुपरिष्टादव्ययत्वं नियमेन पश्यामः ।

तथा च खलु येनेत्ययमनव्ययानामव्ययत्वसंपत्तिर्भवति, तथा समसनमव्ययीभावः।[ii]

इत्यवगम्यम् ।——— जिन पदों का समास किया जाता है उनसे पूर्व अव्ययों का अनव्ययों का निश्चित रूप से विचार किया जाता है। समास जब होता है तो अनव्यव अव्यय हो जाते हैं। समसनम् अर्थात् एकीकरण करके अव्ययीभाव कर दिया जाता है।

अव्ययीभावे पूर्वपदार्थप्राधान्यमिति प्रायोवादः। सूपप्रति, अक्षपरीत्यादिषु उत्तरपदार्थप्राधान्यस्य.। उन्मत्तगङ्गं तिष्ठद्गु- इत्यादिष्वन्यपदार्थप्राधान्यस्य च दर्शनेन व्यभिचारात् । अत एव यत्राव्ययेन समासोऽव्ययार्थप्राधान्यं चेत्यादिकमपि नाव्ययीभावलक्षणम्। सूपप्रत्यादौ[iii] व्यवभिचारवारणेऽपि तिष्ठद्गु, उन्मत्तगङ्गम्, सप्तगङ्गम्, पारेगङ्गम्, द्विमुनीत्यादिष्वनव्ययसमासेष्वप्यव्ययीभावत्वदर्शनात्[iv] । तस्मात् संख्या किमव्ययीभावस्य लक्षणमिति चेत्- अत्रोच्यते । यतोऽनव्ययमव्ययं भवति समासविधानात् सोऽव्ययीभावः । विधेयमव्ययत्वं च नपुंसकयोग्य यत्किञ्चित् विभक्तिनियतमेवेह प्रतिपद्यम् ।[v]

अर्थात् – अव्ययीभाव समास में पूर्वपदार्थ प्रधान होता है यह सामान्य नियम है। परन्तु – सूपप्रति, अक्षपरि इत्यादियों में तो उत्तर पद प्रधान है।

उन्मत्तगङ्गम्, तिष्ठद्गु आदि में अन्यपद प्रधान होने से दोष प्रतीत हो रहा है। जहां अव्यय के द्वारा समास किया जाता है, या अव्ययार्थ प्राधान्य मानकर समास होता है वहां अव्ययीभाव का लक्षण घटित नहीं होगा। सूपप्रति आदि के दोष निवारण में भी तिष्ठद्गु, उन्मत्गङ्गम्,

सप्तगङ्गम, पारेगङ्गम, द्विमुनि..... इत्यादियों में अव्यय न होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है। अतः जब हम यह कहा जाएगा कि अव्ययीभाव समास का क्या लक्षण है? तो आचार्य मधुसूदन ओझा जी कहते हैं – अत्रोच्यते। यतोऽनव्ययमव्ययं भवति समासविधानात् सोऽव्ययीभावः । विधेयमव्ययत्वं च नपुंसकयोग्य यत्किञ्चित् विभक्तिनियतमेवेह प्रतिपद्यम् ।

जो समास विधान करने से अनव्यय पद अव्यय हो जाता है वही अव्ययीभाव है। विधेय अव्ययत्व है, वह नपुंसक के योग्य है वह नियत विभक्ति वाला है।

अयमव्ययीभावस्त्रेधा

सर्वानव्ययवृत्तः, सर्वाव्ययवृत्तः, अव्ययानव्ययवृत्तश्च । समभूमि, समपदाति, तिष्ठद्गु, बृहद्गु, सप्तगङ्गम्, प्राग्वनमित्येवमादयोऽनव्ययवृत्ताः। / संप्रति, असंप्रति, इत्येवमादयोऽव्ययवृत्ताः / परिविन्ध्यम् उपकृष्णम्, अधिहरि, इत्येवमादयः, स्वलक्षणाः । लोहितगङ्गमित्येवमादयो बहुव्रीहिलक्षणाः। सप्तगङ्गमित्येवमादयो द्विगुलक्षणाः। सर्वमपीदमुपरिष्टात् विस्पष्टमुपदिष्टं द्रष्टव्यम् ।

आचार्य मधुसूदन ओझा जी इस तरह चर्चा के बाद अव्ययीभाव समास को महत्वपूर्ण तीन भागों में विभाजित करते हैं।

1. **सर्वानव्ययवृत्तः**–जिसमें कोई भी अव्यय नहीं है। यथा– समभूमि, समपदाति, तिष्ठद्गु, बहद्गु, सप्तगङ्गम्, प्राग्वनम् इत्यादि।
2. **सर्वाव्ययवृ**त्तः– जिसमें सभी अव्यय हैं। यथा– सम्प्रति, असम्प्रति इत्यादि।
3. **अव्ययानव्ययवृत्तश्च**– जिसमें कुछ अव्यय हैं, कुछ अव्यय नहीं है। यथा– परिविन्ध्यम् उपकृष्णम्, अधिहरि इत्यादि।

बहुव्रीहिलक्षण से युक्त–लोहितगङ्गम् इत्यादि।

द्विगुलक्षण से युक्त– सप्तगङ्गम्

विभक्त्यर्थे वर्तमानमव्ययमव्यवहितं प्राक् प्रयुज्यमानमव्ययीभावाय भवति[vi]। कारकविभक्तिर्नामनः पश्चादेव प्रयुज्यते इति संस्कृतभाषायां नियमः[vii]किन्तु कारकविभक्तेरर्थे वर्तमानं किञ्चिदव्ययं चेत्तद्विभक्ति पर्य्यावृत्त्या विवक्षितं स्यात् । तदास्य नाम्नः प्रागेव संसक्तं तत् प्रयुज्यते । ततस्तेनाव्ययेनोक्तार्थत्वात् पुनरमुष्य नाम्नः पश्चात् कारकविभक्तिर्निवृत्ताकाङ्क्षा नोत्पद्यते । अत एवेदमनव्ययमपीदानीमव्ययं भवतीत्ययं समासोऽव्ययीभावशब्देनाख्यायते । यथा हरौ- इति वक्तव्ये तत्समानार्थतया "अधिहरि" इत्येवमाख्यायते । तत्र हरिशब्दादुत्तरतः प्रयुक्ता सप्तमी विभक्तिर्यावन्तमर्थं प्रत्यययायति तावन्तमेव निर्विशेषं निर्विशेषं पूर्वतः प्रयुक्तोऽयमधिशब्दः। विशेषस्तु केवलमेतावानेव द्रष्टव्यो यदेकत्र विभक्तिः पश्चादेव प्रयुज्यते न प्राक् । अन्यत्राव्ययं प्रागेव प्रायः प्रयुज्यते न पश्चात् । अधिकरणं त्वव्ययार्थः प्रधानमिति लिङ्गसंख्याद्यसमन्वयाद्विभक्तयन्तराप्राप्तिः। मुख्याव्ययेतरशब्दे यत्र लिङ्गान्तराप्राप्तिः। तत्र सामान्ये नपुंसकम्। यत्र विभक्त्यन्तराप्राप्तिस्तत्र प्रथमा। यत्र वचनान्तराप्राप्तिः- तत्रैकवचनम्। इति सामान्यनियमादिहाप्यव्ययीभावे पूर्वपदार्थ-प्राधान्येऽप्युत्तरपदस्यानव्ययत्वात्तदुत्तरं प्रथमैकवचनसिद्धिः। नपुंसकवच तत्कार्यम्। तेन गृहे इत्यर्थेऽधिगृहम्। गोपीत्यर्थेऽधिगोपम्। शालायामित्यर्थेऽधिशालम् । मत्यामिति- अधिमति।[viii]

विभक्ति आदि के अर्थ में वर्तमान अव्यय बिना बाधा के पूर्व में प्रयोग अव्ययीभाव के लिए होता है।[ix] संस्कृत भाषा का नियम है कि कारक, विभक्ति और नाम पदों के बाद में प्रयोग होते है। किन्तु कारक विभक्ति के अर्थ में वर्तमान अव्यय इस विभक्ति को बताने वाला होता है यह जिज्ञासा होती है।

इस प्रकार से अनव्यय पद को भी अव्यय बना ले यही अव्ययीभाव समास की विशेषता होती है जैसे– हरौ इस पद समानार्थक अधिहरि है।

हरि शब्द से उत्तर प्रयुक्त की गई सप्तमी विभक्ति के अर्थ में बोध होता है, वैसे ही पूर्व में प्रयोग किया गया अधि शब्द सप्तमी का वाचक होता है।

समास में सामान्य नियम है कि उत्तर पद में प्रथमा एकवचन की सिद्धि होती है और नपुंसक के समान कार्य होता है जैसे गृहे इति अधिगृहम्, गोपि इति अधिगोपम् आदि।

(पूर्वपक्ष)–अथवा– गृहे अधिगृहमित्यनयोः समानार्थकत्वं नास्ति। अधिकरणार्थस्य भावत्वविवक्षायामुत्तरतो विभक्तियोगः । सत्वत्व' विवक्षायां पूर्वतोऽव्ययोगः इति वैषम्यात्। अत एवाव्ययीभावादुत्तरतः सर्वा विभक्तयः प्राप्नुवन्ति तदर्थसमन्वयोपपत्तेः । दृश्यन्ते हि अधिगृहात्, अधिगृहेण, अधिगृहे', अधिगृहमित्येवं विभक्त्यर्थयुक्ताः....।[x]

पूर्वपक्षी यह शंका करता है कि गृहे तथा अधिगृहम् दोनों समान अर्थ के वाचक नहीं है। अधिकरण का भावार्थ की विवक्षा में उत्तर पद का विभक्ति से योग होता है।

अतः भाव अर्थ से उत्तर सभी विभक्तियां प्राप्त होती हैं, अर्थ के साथ सम्बन्ध का बोध होता है। जैसे– अधिगृहात्, अधिगृहम्, अधिगृहेण, अधिगृहे आदि। ——ऐसी बात नहीं है विभक्ति के योग से अव्ययीभाव में हानि नहीं होगी।

अचार्य मधुसूदन ओझा ने अव्ययीभाव समास के प्रमुख सूत्र अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धि... । को अपने शब्दों में इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

संपत्त्याद्यर्थेवर्तमानमव्ययमव्यवहितंप्राक्प्रयुज्यमानमप्यव्ययीभावाय भवति [xi]।

सम्पत्त्यादयोऽर्था यथा—

सम्पत्तिश्च समृद्धिव्यृद्धी वीप्साऽऽनुपूर्व्यं च । अर्थानतिवृत्तिश्चाभावश्चैवात्ययश्च योग्यत्वम् ॥ [1] ॥
शब्दाप्रादुर्भावासंप्रति सादृश्य सदृशार्थाः ।
मध्यसमीपौ युगपत् पश्चात्पर्य्यन्त साकल्ये ॥ [2] ॥
एष्वर्थेषु यदव्ययमुपपन्नं प्राक् प्रयुज्यमानं स्यात् । तदवश्यमुत्तरस्य च नाम्नः स्यादव्ययत्वाय ॥[3]

क्षत्राणां सम्पत्तिः सक्षत्रम्। मद्राणां समृद्धिः सुमद्रम्। ऋद्धैराधिक्यम् समृद्धिः। अनुरूपमात्मभावः संपत्तिरिति भेदः। यवनानां व्यृद्धिर्दुर्यवनम्। अर्थमर्थं प्रति प्रत्यर्थम्। ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येणेत्यनुज्येष्ठम्। शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति । निर्मक्षिकम् । हिमस्यात्ययो ऽतिहिमम् । रूपस्ययोग्यमनुरूपम् । योग्यस्यानुरूपं यथायोग्यमित्यपि द्रष्टव्यम्। हरि शब्दस्य प्रकाश इति हरि । निद्रा संप्रति न युज्यते इत्यतिनिद्रम्। हरेः सादृश्यं सहरि । सादृश्यार्थः सहशब्दः । सहशब्दस्य हशब्दो विलुप्यतेऽव्ययीभावे। यदि कालवाचकः परतो न स्यात् । यथा शब्दस्तु सादृश्यार्थो नाव्ययीभावे प्रयुज्यते स्वभावात् । यथाहरिस्तथाहरः । हरेरूपमानत्वं यथा शब्दो द्योतयति। सदृशः सख्या ससखि । सदृशार्थः सहशब्दः। दिशोर्मध्येऽपदिशम् । कृष्णस्य समीपमुपकृष्णम् । चक्रेण युगपत् सचक्रम्। सहपूर्वाल्लम् यौगपद्यार्थः सह शब्दः। विष्णोः पश्चादनुविष्णु। आग्निग्रन्थपर्य्यन्तमधीते साग्नि। तृणमप्यपरित्यज्येति सतृणमत्ति साकल्येनेत्यर्थः।

इस प्रकार आचार्य पण्डित मधुसूदन ओझा जी ने 'व्याकरणविनोद' नामक अपने ग्रन्थ में अव्ययीभावसमास से सम्बन्धित सभी सूत्रों को लेते हुए अव्ययीभावसमास की गवेषणात्मक, शोधपरक, गम्भीर एवं महत्त्वपूर्ण विवेचना की है। पत्र में कुछ मुख्य अंशो को ही प्रदर्शित किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. (क) अव्ययीभावश्च, २.१.५
   (ख) व्याकरणविनोदः, अव्ययीभावः समासप्रकरणम् (पण्डितमधुसूदन ओझा)
2. पाणिनि अष्टाध्यायी, १.१.३७
3. व्याकरणविनोदः, अव्ययीभावः समासप्रकरणम् (पण्डितमधुसूदन ओझा)
4. सुप् प्रतिना मात्रार्थे, पा. अ., २.१.९, (मात्रा (स्वल्प) अर्थ में वर्तमान प्रति शब्द का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है और वह अव्ययीभाव समास होता है।)
5. संख्या वंश्येन,२.१.१९
6. नाव्ययीभावादतोऽस्त्वपञ्चम्याः, पा. अ.,२.४.८३ , तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्, पा. अ., २.४.८४ (व्याकरणविनोदः, अव्ययीभावः समासप्रकरणम् (पण्डितमधुसूदन ओझा), पृष्ठ ४६
7. अव्ययं विभक्तिसमीप.....।, पा.अ., २.६.१
8. परश्च। पा.अ., ३.१.२
9. व्याकरणविनोदः, अव्ययीभावः समासप्रकरणम् (पण्डितमधुसूदन ओझा)
10. अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्व्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ।, पा.अ. २.१.६
11. व्याकरणविनोदः, अव्ययीभावः समासप्रकरणम् (पण्डितमधुसूदन ओझा)
12. अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्व्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ।, पा.अ. २.१.६ (व्याकरणविनोदः, अव्ययीभावः समासप्रकरणम् (पण्डितमधुसूदन ओझा)

---

[i] पाणिनि अष्टाध्यायी, १.१.३७

[ii] व्याकरणविनोदः, अव्ययीभावः समासप्रकरणम् (पण्डितमधुसूदन ओझा)

[iii] **सुप् प्रतिना मात्रार्थे**, पा. अ., २.१.९, (मात्रा (स्वल्प) अर्थ में वर्तमान प्रति शब्द का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है और वह अव्ययीभाव समास होता है।)

[iv] संख्या वंश्येन,२.१.१९

[v] नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्या:, पा. अ.,२.४.८३ ,
तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्, पा. अ., २.४.८४
(व्याकरणविनोद:, अव्ययीभाव: समासप्रकरणम्
(पण्डितमधुसूदन ओझा), पृष्ठ ४६

[vi] अव्ययं विभक्तिसमीप.....।, पा.अ., २.६.१

[vii] परश्च। पा.अ., ३.१.२

[viii] व्याकरणविनोद:, अव्ययीभाव: समासप्रकरणम्
(पण्डितमधुसूदन ओझा)

[ix] अव्ययं
विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावप
श्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ।,
पा.अ. २.१.६

[x] व्याकरणविनोद:, अव्ययीभाव: समासप्रकरणम्
(पण्डितमधुसूदन ओझा)

[xi]अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादु
र्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ।,
पा.अ. २.१.६ (व्याकरणविनोद:, अव्ययीभाव: समासप्रकरणम्
(पण्डितमधुसूदन ओझा)